कृषि जल प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका

मोनालिशा प्रमाणिक[1], पी. एस. ब्रह्मानंद[1] , राजीव रंजन[2] , विजय प्रजापति[1] और तृप्तिमयी सुना[1]

[1]जल प्रौद्योगिकी केंद्र, [2]कृषि भौतिकी संभाग, भा.कृ.अनु.प. – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

ईमेल: monalishapramanik@gmail.com

जल प्रबंधन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। वे जल प्रबंधन के कई चरणों में शामिल हैं, जैसे निर्णय लेना, जल संग्रह, सिंचाई, वर्षा जल संचयन और घरेलू जल प्रबंधन। वे खेतों के साथ-साथ घर में भी जल प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। महिलाएं कई कृषि गतिविधियों में शामिल हैं। जनगणना 2001 के अनुसार, 32% महिलाएं भूमि तैयार करने में, 80% बीज की सफाई और बुवाई में, 86% अंतर-खेती गतिविधियों में और 84% कटाई, कटाई, विनोइंग, सुखाने, सफाई और भंडारण में योगदान देती हैं। गांवों में दूरदराज के इलाकों से पानी लाने में महिलाओं का काफी समय और मेहनत खर्च होती है। खेतों की सिंचाई में भी उनकी अहम भूमिका होती है।

महिलाओं की भूमिका और योगदान

1. **जल संरक्षण**: ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ जल संरक्षण के विभिन्न पारंपरिक तरीकों का उपयोग करती हैं, जैसे कि वर्षा जल संचयन, तालाबों की देखभाल और पारंपरिक जल स्रोतों का संरक्षण। वे अपने घरेलू और कृषि कार्यों में जल की बचत करने के उपाय अपनाती हैं।
2. **सिंचाई प्रबंधन**: महिलाएँ खेतों की सिंचाई के लिए जल की मात्रा को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाती हैं। वे ड्रिप इरिगेशन, स्प्रिंकलर सिस्टम और अन्य जल-संरक्षण तकनीकों को अपनाने में रुचि ले रही हैं।
3. **जैविक खेती और जल उपयोग दक्षता**: महिलाएँ जैविक खेती को बढ़ावा देती हैं, जिसमें कम जल की आवश्यकता होती है। वे मल्चिंग, मिश्रित खेती और समेकित कृषि प्रणाली जैसी तकनीकों का उपयोग करके जल उपयोग दक्षता को बढ़ाने में मदद करती हैं।
4. **परंपरागत ज्ञान और नवाचार**: भारतीय ग्रामीण महिलाएँ जल प्रबंधन से जुड़े पारंपरिक ज्ञान को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करती हैं। वे जल संचयन और भूजल पुनर्भरण के पारंपरिक तरीकों को अपनाने के साथ-साथ आधुनिक तकनीकों का भी उपयोग कर रही हैं।
5. **सामुदायिक भागीदारी**: कई क्षेत्रों में महिलाएँ जल उपयोगकर्ता समूह (WUA) और स्वयं सहायता समूह (SHG) का हिस्सा बनकर जल प्रबंधन की योजनाओं में सक्रिय भाग लेती हैं। वे जल संरक्षण और कुशल जल उपयोग के लिए सामुदायिक प्रयासों को बढ़ावा देती हैं।

जल संरक्षण पर सरकार का प्रमुख कार्यक्रम:

महिलाएं जल संरक्षण प्रयासों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। सरकार ने महिलाओं, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं को जल संरक्षण से जोड़ने के लिए कई पहल की हैं।

- जल शक्ति अभियान: कैच द रेन (जेएसए:सीटीआर) अभियान के तहत,

महिलाएं देश में जल संरक्षण की दिशा में प्रयास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वर्ष 2023 के जेएसए:सीटीआर अभियान का फोकस "**जल शक्ति से नारी शक्ति और नारी शक्ति से जल शक्ति**" था ।

- नेहरू युवा केंद्र संगठन, युवा मामले और खेल विभाग अपने जिला स्तरीय युवा अधिकारियों और स्वयंसेवकों के माध्यम से जल संरक्षण प्रयासों में महिलाओं सहित पूरे समुदाय को शामिल करते हुए कैच द रेन परियोजना को लागू कर रहा है।
- राष्ट्रीय जल नीति, 2012 में अन्य बातों के साथ-साथ जल परियोजनाओं और पंचायतों, नगर पालिकाओं, निगमों आदि जैसे स्थानीय शासी निकायों और जल उपयोगकर्ता संघों में महिलाओं की भागीदारी के संबंध में प्रावधान हैं। मार्च, 2019 से एक मासिक "जल वार्ता" श्रृंखला चलाई गई थी , जिसमें सभी क्षेत्रों की महिला जल वार्ताकारों को भी अपने सर्वोत्तम जल संरक्षण अभ्यासों को साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया था।

चुनौतियाँ

2011 की जनगणना के अनुसार, कुल महिला श्रमिकों में से 55% खेतिहर मजदूर थीं और 24% किसान थीं। हालांकि, केवल 12.8% महिलाओं के पास परिचालन जोतों का स्वामित्व था, जो कृषि में भूमि जोतों के स्वामित्व में लैंगिक असमानता को दर्शाता है। हालाँकि महिलाएँ जल प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे:

- निर्णय लेने की प्रक्रिया में सीमित भागीदारी
- जल प्रबंधन से जुड़े संसाधनों की कमी
- तकनीकी ज्ञान और प्रशिक्षण की आवश्यकता
- भूमि स्वामित्व में असमानता

समाधान और भविष्य की संभावनाएँ

- महिलाओं को जल प्रबंधन में अधिक सशक्त बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
- जल उपयोगकर्ता समूहों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए।
- आधुनिक जल प्रबंधन तकनीकों को महिलाओं तक पहुँचाने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों को पहल करनी चाहिए।
- जल से संबंधित नीतियों और योजनाओं में महिलाओं की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए।

निष्कर्ष

महिलाएँ कृषि जल प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उनकी भागीदारी के बिना जल संरक्षण और जल उपयोग दक्षता को हासिल करना मुश्किल होगा। महिलाओं को जल प्रबंधन की मुख्यधारा में शामिल कर, उन्हें आवश्यक संसाधन और प्रशिक्षण देकर, हम सतत कृषि और जल संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठा सकते हैं।

***